नीलकण्ठधारणी

नमो रत्नत्रयाय नम आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय

महाकारुणिकाय सर्वबन्धनच्छेदनकराय सर्वभवसमुद्रशोषणकराय

सर्वव्याधिप्रशमनकराय सर्वेत्युपद्रवविनाशनकराय सर्वभयेषु

त्राणकराय तस्मै नमस्कृत्वा इदं आर्यावलोकितेश्वर स्तवनं नीलकण्ठ

नाम हृदयं वर्तयिष्यामि सर्वार्थसाधनं शुभं अजेयं सर्वभूतानां भव

मार्गविशोधकं तद्यथा ओं आलोके आलोकमति लोकातिक्रान्ते हे हरे

आर्यावलोकितेश्वर महाबोधिसत्त्व हे बोधिसत्त्व हे महाबोधिसत्त्व हे

प्रियबोधिसत्त्व हे महाकारुणिक स्मर हृदयं हि हि हरे आर्यावलोकितेश्व

र महेश्वर परमार्थचित्त महाकारुणिक कुरु कुरु कर्म साधय साधय वि

द्यां देहि देहि मे वरं कामं गम विहंगम विगम सिद्धयोगेश्वर धुरु धुरु

वीर्यन्ते महावीर्यन्ते धर धर धरे इन्द्रेश्वर चल चल विमल अमल आर्या

वलोकितेश्वर जिन कृष्णजटामकुट अवरम प्ररम विरम महासिद्धविद्या

धर बल बल महाबल मल मल महामल चल चल महाचल कृष्णवर्ण

दीर्घ कृष्णपक्ष निर्घातन हे पद्महस्त चक्रहस्त वरवरेश शंखशब्द कृष्णसर्पकृ